2. सृजनात्मक बालकों में मौलिकता (Originality in the Creative Children):- (4)

सृजनात्मक बालकों में मौलिकता के दर्शन होते हैं तथा उनका व्यवहारिक दृष्टिकोण सामान्य बालकों से अलग होता है।

3. उत्सुकता तथा जिज्ञासा (Curiosity):- सृजनशील बालक या व्यक्ति में अपने कार्य के प्रति अत्यधिक उत्सुकता तथा जिज्ञासा रहती है।

4. परिहास प्रियता (Joking Nature):- इस प्रकार के बालकों द्वारा परिहास, हँसी-मजाक, मनोविनोद की प्रवृत्ति होती है।

5. स्वायत्तता (Autonomy):- सृजनशील बालक या व्यक्ति में अपनी स्वायत्तता के प्रति अत्यधिक लगाव होता है। जब तक उनके मन की शांति नहीं हो जाती, तब तक उनमें व्याकुलता बनी रहती है।

6. संवेदनशीलता (Sensitivity):- सृजनशील बालक या व्यक्ति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। वे अपने उत्तरदायित्व को समझते हैं तथा अपने कार्य के प्रति गम्भीर होते हैं।

सृजनात्मक बालकों के प्रकार (Kinds of Creative Children)

प्रत्येक बालक में कुछ न कुछ रचनात्मक शक्ति अवश्य पाई जाती है क्योंकि रचनात्मकता (सृजनात्मकता) एक स्वाभाविक गुण है। लेकिन इन पर वातावरण का प्रभाव अवश्य पड़ता है। विज्ञान व तकनीकी से लेकर दैनिक कार्य व समाज के प्रत्येक क्षेत्र में रचनात्मकता की आवश्यकता पड़ती है। जीवन के विविध क्षेत्र के आधार पर सृजनात्मक बालकों का निम्नलिखित रूपों में वर्गीकरण किया जा सकता है:-

(i) वैज्ञानिक रचनात्मकता (Scientific Creativity):- इस प्रकार की रचनात्मकता/सृजनात्मकता नये प्रयोग व शोध में पाई जाती है।

(ii) तकनीकी रचनात्मकता (Technical Creativity):- इस प्रकार की रचनात्मकता नये कार्य व तकनीकी में पाई जाती है।

Scanned with CamScanner

(iii) सौन्दर्यात्मक रचनात्मकता/सृजनात्मकता (Asthetic Creativity):-
इस प्रकार की रचनात्मकता नवीन विधि में परिलक्षित होती है।

(iv) साहित्यिक रचनात्मकता/सृजनात्मकता (Literature Creativity):-
इस प्रकार की रचनात्मकता लेखन, कविता, कहानी आदि में दिखाई पड़ती है।

(v) शैक्षिक रचनात्मकता (Educational Creativity):-
इस प्रकार की रचनात्मकता में शिक्षा में नवीन प्रयास, दर्शन आदि में दिखाई देती है।

(vi) कलात्मक रचनात्मकता/सृजनात्मकता (Skill Creativity):-
इस प्रकार की रचनात्मकता में नई कला की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है।

(vii) संगीतात्मक रचनात्मकता (Musical Creativity):-
धुन, संगीत व लय की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है।
इस प्रकार की रचनात्मकता में नयी

(viii) औद्योगिक रचनात्मकता (Industrial Creativity):-
इस प्रकार की सृजनात्मकता में नवीन कार्य, एवं उद्योग का विचार आदि आता है।

सृजनात्मकता के क्षेत्र (Area of the Creativity)

सृजनात्मकता के विभिन्न क्षेत्र होते हैं। मानव के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के समस्त कार्य इस क्रिया के ही उत्पादनात्मकता) के ही परिणाम है। सृजनात्मक क्षेत्र के अन्तर्गत मानव का सम्पूर्ण जीवन आ जाता है। मनुष्य को हम वैज्ञानिक, कलाकार, साहित्यकार, कारीगर आदि विभिन्न रूपों में देखते हैं। वह अपनी सृजनात्मकता के क्षेत्र के अन्तर्गत ही आते हैं। विभिन्न विद्वानों के अनुसार सृजनात्मकता के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित

Scanned with CamScanner

सृजनात्मकता के क्षेत्र निम्नलिखित हैं :-

(i) विज्ञान (Science) :- इसके अन्तर्गत भौतिकी, रसायन, औषधि-निर्माण आदि से सम्बन्धित हर प्रकार के आविष्कार एवं अनुसन्धान आ जाते हैं।

(ii) कला - कौशल (Art Skill) :- संगीत, नृत्य, चित्रकला, वास्तुकला तथा धातु, काष्ठ, चर्म कागज आदि से सम्बन्धित कौशल भी सृजनात्मक क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।

(iii) तकनीकी (Technology) :- इस क्षेत्र के अन्तर्गत विशेष रूप से मशीनों, उनके यन्त्रों व पुर्जों आदि के निर्माण का क्षेत्र आता है।

(iv) साहित्य (Literature Area) :- इस क्षेत्र के अन्तर्गत कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध आदि की रचना तथा भाषण कला, लेखन-कला सम्मिलित हैं।

(v) सामाजिक क्षेत्र (Social Area) :- व्यक्ति को समाज में आपस में एक दूसरे के सहयोग द्वारा अनेक प्रकार की सामाजिक क्रियाओं-धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, राजनैतिक आदि को सम्पादित करना पड़ता है और अनेक समस्याओं का समाधान करना पड़ता है। इन सभी अवसरों पर व्यक्ति अपनी सृजनात्मक शक्ति का प्रयोग करता है।

(vi) व्यक्तिगत क्षेत्र (Individual Area) :- इस क्षेत्र के अन्तर्गत व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन में किसी व्यवसाय, उद्योग या कार्य में लगा रहता है। वह सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षिक प्रशासनिक जिस क्षेत्र में रहता है, अपनी सृजनात्मकता का प्रयोग करता है।

(vii) मानसिक प्रक्रियाओं का क्षेत्र (Mental Activities Area) :- विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं जैसे कल्पना, चिन्तन, तर्क, समस्या समाधान और अभिव्यक्ति में सृजनात्मकता का प्रमुख भाग होता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner